اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ

से	फल (जमा)	कोई	और नहीं निकलता	क़ियामत का इल्म	उस की तरफ़ लौटाया (हवाले किया) जाता है

اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ

और जिस दिन	उस के इल्म में	मगर	और न वह बच्चा जनती है	कोई औ़रत	और नहीं हामिला होती है	उस के ग़िलाफ़ों (गाभों)

يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ﴿٤٧﴾ ۚ

47	कोई शाहिद	नहीं हम से	इत्तिलाअ़ दे दी हम ने तुझे	वह कहेंगे	मेरे शरीक	कहां	वह पुकारेगा उन्हें

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ

नहीं उन के लिए	और उन्हों ने समझ लिया	उस से क़ब्ल	जो वह पुकारते थे	उन से	और खोया गया

مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْئَمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۡ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ

बुराई	उसे लग जाए	और अगर	भलाई मांगने	से	इन्सान	नहीं थकता	48	कोई बचाओ (ख़लासी)

فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ

किसी तक्लीफ़	के बाद	अपनी तरफ़ से	रहमत	हम चखाएं उसे	और अलबत्ता अगर	49	नाउम्मीद	तो मायूस हो जाता है

مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	क़ाइम होने वाली	क़ियामत	और मैं ख़याल नहीं करता	यह मेरे लिए	तो वह ज़रूर कहेगा	जो उस को पहुँची

رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ

पस हम ज़रूर आगाह कर देंगे	अलबत्ता भलाई	उस के पास	मेरे लिए	बेशक	अपने रब की तरफ़	मुझे लौटाया गया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۡ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾ وَاِذَآ

और जब	50	सख़्त	एक अ़ज़ाब	से	और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएंगे उन्हें	उस से जो उन्हों ने किया (आमाल)	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ

बुराई	आ लगे उसे	और जब	अपना पहलू	और बदल लेता है	वह मुँह मोड़ लेता है	इन्सान पर	हम इन्आ़म करते हैं

فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	से	अगर हो	क्या तुम ने देखा	आप (स) फ़रमा दें	51	(लम्बी) चौड़ी	तो दुआओं वाला

ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾

52	दूर दराज़	ज़िद	में	वह	उस से जो	बड़ा गुमराह	कौन	तुम ने कुफ़्र किया उस से	फिर

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ

कि यह	उन के लिए	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक	और उन की ज़ात में	अतराफ़े आ़लम में	हम जल्द दिखा देंगे उन्हें अपनी आयात

الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ

ख़ूब याद रखो बेशक वह	53	शाहिद	हर शै	पर-का	कि वह	आप के रब के लिए	क्या काफ़ी नहीं	हक़

ع ١٠ / ٦ / ١

فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾ ۚ

54	अहाता किए हुए	हर शै पर-का	याद रखो बेशक वह	अपना रब	मुलाक़ात से	शक में

क़ियामत का इल्म उसी के हवाले किया जाता है, और कोई फल अपने गाभों से नहीं निकलता और कोई औ़रत (मादा) हामिला नहीं होती और वह बच्चा नहीं जनती मगर (यह सब) उस के इल्म में होता है। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा: कहां हैं मेरे शरीक? वह कहेंगे: हम ने तुझे इत्तिलाअ़ दे दी कि हम में से कोई (उस का) शाहिद (गवाह) नहीं। (47) और खोया गया उन से जिसे वह (अल्लाह के सिवा) पुकारते थे उस से क़ब्ल, और उन्हों ने समझ लिया कि (अब) उन के लिए कोई ख़लासी नहीं। (48) इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई बुराई लग जाए तो वह नाउम्मीद हो कर मायूस हो जाता है। (49) और अलबत्ता अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँचने के बाद हम अपनी तरफ़ से अपनी रहमत का मज़ा चखाएं तो वह ज़रूर कहेगा: यह मेरे लिए है, और मैं ख़याल नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम होने वाली है, और अगर मुझे अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो बेशक उस के पास मेरे लिए अलबत्ता भलाई होगी, पस हम काफ़िरों को उन के आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे, और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे एक अ़ज़ाब सख़्त। (50) और जब हम इन्सान पर इन्आ़म करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे (ज़रा) बुराई लगे तो लम्बी चौड़ी दुआओं वाला (बन जाता है)। (51) आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम ने देखा (यह तो बतलाओ) अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से हो, फिर तुम ने उस से कुफ़्र किया तो उस से बड़ा गुमराह कौन जो मुख़ालिफ़त में दूर तक निकल गया हो? (52) हम जल्द अपनी आयात उन्हें अतराफ़े आ़लम में और (ख़ुद) उन की ज़ात में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह (क़ुरआन) हक़ है, क्या आप (स) के रब के लिए काफ़ी नहीं कि वह हर शै का शाहिद है। (53) ख़ूब याद रखो! बेशक वह अपने रब की मुलाक़ात (रूबरू हाज़री) से शक में हैं, याद रखो! बेशक वह हर शै का अहाता किए हुए है। (54)

آيَاتُهَا ٥٣ ❀ (٤٢) سُوْرَةُ الشُّوْرٰى ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआ़त 5	(42) सूरतुश शूरा सलाह औ मश्वरा	आयात 53

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ۝١ عٓسٓقٓ ۝٢ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ

आप (स) से पहले	वह जो	और तरफ़	आप (स) की तरफ़	वहि फ़रमाता है	इसी तरह	2	अ़यन-सीन-क़ाफ़	1	हा-मीम

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ

और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसी के लिए	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝٤ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ

और फ़रिश्ते	उन के ऊपर से	फट पड़ें	आस्मानों (जमा)	क़रीब है	4	अ़ज़मत वाला	बुलन्द

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	याद रखो	ज़मीन में	उस के लिए जो	और वह मग़्फ़िरत तलब करते हैं	अपने रब की तारीफ़ के साथ	तस्बीह करते हैं

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ

अल्लाह	रफ़ीक़	उस के सिवा	ठहराते हैं	और जो लोग	5	मेहरबान	बख़्शने वाला	वह-वही

حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

हम ने वहि किया	और उसी तरह	6	ज़िम्मेदार	उन पर	और आप (स) नहीं	निगरान उन पर (उन्हें देख रहा है)

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ

और आप (स) डराएं	उस के इर्द गिर्द	और जो	बस्तियों का मरकज़ (अहले मक्का)	ताकि आप (स) डराएं	अ़रबी ज़बान	क़ुरआन	आप (स) की तरफ़

يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝٧

7	दोज़ख़ में	और एक फ़रीक़	जन्नत में	एक फ़रीक़	उस में	नहीं शक	जमा होने का दिन

وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ

जिसे चाहता है	वह दाख़िल करता है	और लेकिन	एक उम्मत	ज़रूर बना देता उन्हें	चाहता अल्लाह	और अगर

فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨ اَمِ اتَّخَذُوْا

उन्हों ने ठहरा लिए	क्या	8	और न मददगार	कारसाज़	कोई	नहीं उन के लिए	और ज़ालिम (जमा)	अपनी रहमत में

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ

और वह	मुर्दों	ज़िन्दा करता है	और वही	वही कारसाज़	पस अल्लाह	कारसाज़ (जमा)	उस के सिवा

عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٩ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ ع ١/٢

तो उस का फ़ैसला	किसी चीज़	उस में	इख़्तिलाफ़ करते हो तुम	और जो-जिस	9	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर

اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١٠

10	मैं रुजूअ़ करता हूँ	और उस की तरफ़	भरोसा किया मैं ने	उस पर	मेरा रब	वही है अल्लाह	तरफ़-पास अल्लाह

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
अ़यन-सीन-क़ाफ़। (2)
इसी तरह आप (स) की तरफ़ और आप (स) के पहलों की तरफ़ वहि फ़रमाता है अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला। (3)
उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में, और वह बुलन्द, अ़ज़मत वाला है। (4)
क़रीब है कि आस्मान उन के ऊपर से फट पड़ें। और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और उन के लिए मग़्फ़िरत तलब करते हैं जो ज़मीन में हैं, याद रखो! बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला (5)
और जो लोग ठहराते हैं अल्लाह के सिवा (दूसरों को) रफ़ीक़, अल्लाह उन्हें देख रहा है, आप (स) उन पर ज़िम्मेदार नहीं। (6)
और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ वहि किया क़ुरआन अ़रबी ज़बान में ताकि आप (स) डराएं अहले मक्का को और उन्हें जो उस के इर्द गिर्द हैं, और आप (स) डराएं जमा होने के दिन से, कोई शक नहीं उस में, एक फ़रीक़ जन्नत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (7)
और अगर अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें एक उम्मत बना देता और लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई कारसाज़ है और न मददगार। (8)
क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहरा लिए हैं? पस अल्लाह ही कारसाज़ है, वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (9)
और जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह के पास है, वही है अल्लाह मेरा रब, उस पर मैं ने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ करता हूँ। (10)

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

जोड़े	तुम्हारी ज़ात (जिन्स) से	तुम्हारे लिए	उस ने बनाए	और ज़मीन	पैदा करने वाला आस्मानों

وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ ۚ وَهُوَ

और वह	कोई शै	उस के मिस्ल	नहीं	इस (दुनिया) में	वह फैलाता है तुम्हें	जोड़े	चौपायों	और से

السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ⑪ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

वह फ़राख़ करता है	और ज़मीन	आस्मानों	कुंजियां	उस के लिए (पास)	11	देखने वाला	सुनने वाला

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ⑫ شَرَعَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	उस ने मुक़र्रर किया	12	जानने वाला	हर शै का	बेशक वह	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़

مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِیْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ

आप की तरफ़ (को)	हम ने वहि की	और वह जिस	नूह (अ)	उस का	उस ने जिस का हुक्म दिया	वही दीन

وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰۤى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

दीन	कि तुम क़ाइम करो	और ईसा (अ)	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	उस का	और जिस का हुक्म दिया हम ने

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ

अल्लाह	उस की तरफ़	जिस की तरफ़ आप उन्हें बुलाते हैं	मुशरिकों पर	सख़्त	उस में	और तफ़र्रक़ा न डालो तुम

يَجْتَبِیْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِیْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ⑬ وَمَا تَفَرَّقُوْۤا

और उन्हों ने तफ़र्रक़ा न डाला	13	जो रुजूअ करता है	उस की तरफ़	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	अपनी तरफ़	चुन लेता है

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ لَا

और अगर न	आपस की	ज़िद	इल्म	कि आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِیَ بَيْنَهُمْ ؕ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला कर दिया जाता	एक मुद्दते मुक़र्ररा	तक	आप के रब की तरफ़ से	गुज़र चुका होता	फ़ैसला

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِیْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ⑭

14	तरद्दुद में डालने वाला	उस से	अलबत्ता वह शक में	उन के बाद	किताब के वारिस बनाए गए	जो लोग	और बेशक

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ

उन की ख़ाहिशात	और आप न चलें	जैसा कि मैं ने हुक्म दिया है आप (स) को	और क़ाइम रहें	आप बुलाएं	पस उसी के लिए

وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ

कि मैं इंसाफ़ करूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	से - हर किताब	नाज़िल की अल्लाह ने	उस पर जो	मैं ईमान ले आया	और कहें

بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ

तुम्हारे आमाल	और तुम्हारे लिए	हमारे आमाल	हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	अल्लाह	तुम्हारे दरमियान

لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ⑮

15	बाज़गश्त (लौटना)	और उसी की तरफ़	हमारे दरमियान (हमें)	जमा करेगा	अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	कोई हुज्जत (झगड़ा) नहीं हमारे दरमियान

आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, उस ने बनाए तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से जोड़े और चौपायों से जोड़े, वह तुम्हें इस (दुनिया) में फैलाता है। उस के मिस्ल कोई शै नहीं, और वह सुनने वाला, देखने वाला। (11)
उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, वह रिज़्क़ फ़राख़ करता है जिस के लिए वह चाहता है (और जिस पर चाहे) तंग कर देता है, बेशक वह हर शै का जानने वाला। (12)
उस ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर किया है जिस के क़ाइम करने का उस ने हुक्म दिया था नूह (अ) को और जिस की हम ने आप (स) की तरफ़ वहि की, और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) और ईसा (अ) को दिया था कि तुम दीन क़ाइम करो और उस में तफ़र्रक़ा न डालो, वह मुशरिकों पर गरां गुज़रती है जिस की तरफ़ आप (स) उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह अपनी तरफ़ (अपने क़ुर्ब के लिए) जिस को चाहता है चुन लेता है। और जो उस की तरफ़ रुजूअ करता है उसे अपनी तरफ़ से हिदायत देता है। (13)
और उन्हों ने तफ़र्रक़ा न डाला मगर उस के बाद कि उन के पास इल्मे (वहि) आ गया आपस की ज़िद की वजह से, और अगर आप (स) के रब की तरफ़ से एक मुद्दते मुक़र्ररा तक मोहलत देने का फ़ैसला न गुज़र चुका होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और बेशक जो लोग उन के बाद किताब के वारिस बनाए गए अलबत्ता वह उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। (14)
पस उसी के लिए आप (स) बुलाएं और (उस पर) क़ाइम रहें जैसा कि मैं ने आप को हुक्म दिया है और आप (स) उन की ख़ाहिशात पर न (चलें), और कहें कि मैं ईमान ले आया हर किताब पर जो अल्लाह ने नाज़िल की और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह हमें जमा करेगा, और उसी की तरफ़ बाज़गश्त है। (15)

وَالَّذِيۡنَ يُحَآجُّوۡنَ فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا اسۡتُجِيۡبَ لَهٗ حُجَّتُهُمۡ

उन की हुज्जत	कि क़ुबूल कर लिया गया उस के लिए - उस को	उस के बाद	अल्लाह के बारे में	झगड़ा करते हैं	और जो लोग

دَاحِضَةٌ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ وَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ وَّلَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ﴿١٦﴾

16	सख़्त	अ़ज़ाब	और उन के लिए	ग़ज़ब	और उन पर	उन का रब	हां	लगू

اَللّٰهُ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَـقِّ وَالۡمِيۡزَانَ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ

तुझे ख़बर	और क्या	और मीज़ान	हक़ के साथ	किताब	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह

لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيۡبٌ ﴿١٧﴾ يَسۡتَعۡجِلُ بِهَا الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	उस की	वह जल्दी मचाते हैं	17	क़रीब	क़ियामत	शायद

بِهَا ۚ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مُشۡفِقُوۡنَ مِنۡهَا ۙ وَيَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهَا الۡحَـقُّ ؕ

हक़	कि यह	और वह जानते हैं	उस से	वह डरते हैं	ईमान लाए	और जो लोग	उस पर

اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيۡنَ يُمَارُوۡنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىۡ ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ﴿١٨﴾

18	दूर	अलबत्ता गुमराही में	क़ियामत के बारे में	झगड़ते हैं	बेशक जो लोग	याद रखो

اَللّٰهُ لَطِيۡفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرۡزُقُ مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الۡقَوِىُّ الۡعَزِيۡزُ ﴿١٩﴾ ع ١٠ ٢

19	ग़ालिब	क़वी	और वह	जिस को चाहे	वह रिज़्क़ देता है	अपने बन्दों पर	मेहरबान	अल्लाह

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الۡاٰخِرَةِ نَزِدۡ لَهٗ فِىۡ حَرۡثِهٖ ۚ وَمَنۡ

और जो	खेती में उस की	हम इज़ाफ़ा कर देते हैं उस के लिए	आख़िरत	खेती	चाहता है	जो शख़्स

كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الدُّنۡيَا نُؤۡتِهٖ مِنۡهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ

आख़िरत में	और नहीं उस के लिए	उस में से	हम उसे देते हैं	दुनिया की खेती	चाहता है

مِنۡ نَّصِيۡبٍ ﴿٢٠﴾ اَمۡ لَهُمۡ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوۡا لَهُمۡ مِّنَ الدِّيۡنِ

दीन	से - ऐसा	उन के लिए	उन्हों ने मुक़र्रर किया	कुछ शरीक (जमा)	क्या उन के लिए	20	कोई हिस्सा

مَا لَمۡ يَاۡذَنۡۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةُ الۡفَصۡلِ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	एक क़ौले फ़ैसल	और न अगर	अल्लाह	उस की	इजाज़त दी	जो - जिस नहीं

وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيۡنَ

ज़ालिमों	तुम देखोगे	21	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	ज़ालिमों	और बेशक

مُشۡفِقِيۡنَ مِمَّا كَسَبُوۡا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ

और जो लोग	उन पर	वाक़े होने वाला	और वह	उस से जो उन्हों ने कमाया (आमाल)	डरते होंगे

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىۡ رَوۡضٰتِ الۡجَنّٰتِ ۚ لَهُمۡ

उन के लिए	जन्नतों	बाग़ात	में	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए

مَّا يَشَآءُوۡنَ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَضۡلُ الۡكَبِيۡرُ ﴿٢٢﴾

22	बड़ा	फ़ज़्ल	वह - यही	यह	उन के रब के हां	जो वह चाहेंगे

और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं उस के बाद कि उस को क़ुबूल कर लिया गया, उन की हुज्जत (क़ुबूल करने वालों से झगड़ा) उन के रब के हां लगू (बेसबात) है और उन पर ग़ज़ब है, और उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (16)

अल्लाह है जिस ने किताब हक़ के साथ नाज़िल की और मीज़ान (भी), और तुझे क्या ख़बर कि शायद क़ियामत क़रीब हो। (17)

उस की वह लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते। और जो लोग ईमान लाए वह उस से डरते हैं और वह जानते हैं कि यह हक़ है, याद रखो! बेशक जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं वह दूर (बड़ी) गुमराही में हैं। (18)

अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है, और वह क़वी, ग़ालिब है। (19)

जो शख़्स चाहता है खेती आख़िरत की, हम उस की खेती में उस के लिए इज़ाफ़ा कर देते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसे उस में से देते हैं और उस के लिए नहीं आख़िरत में कोई हिस्सा। (20)

या उन के कुछ शरीक हैं जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी, और अगर एक क़ौले फ़ैसल न होता तो उन के दरमियान (यहीं) फ़ैसला हो जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (21)

तुम ज़ालिमों को देखोगे अपने आमाल (के वबाल) से डरते होंगे, और वह उन पर वाक़े होने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, वह जन्नतों के बाग़ात में होंगे, वह जो चाहेंगे उन के रब के हां (मिलेगा) यही है बड़ा फ़ज़्ल। (22)

ذٰلِكَ الَّذِیْ یُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	वह जो ईमान लाए	अपने बन्दे	अल्लाह बशारत देता है	वह जिस	यही

قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ؕ وَمَنْ یَّقْتَرِفْ

कमाएगा	और जो	क़राबतदारी में-की	मुहब्बत	सिवाए	कोई अजर	इस पर	मैं तुम से नहीं मांगता	फ़रमा दें

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِیْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	क्या	23	क़द्र दान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	खूबी	उस में	हम बढ़ा देंगे उस के लिए	कोई नेकी

افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ یَّشَاِ اللّٰهُ یَخْتِمْ عَلٰی قَلْبِكَ ؕ وَیَمْحُ

और मिटाता है	तुम्हारे दिल पर	वह मुहर लगा देता	चाहता अल्लाह	सो अगर	झूट	अल्लाह पर	उस ने बाँधा

اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَیُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾

24	दिलों की बातों को	जानने वाला	बेशक वह	अपने कलिमात से	हक़	और साबित करता है	बातिल	अल्लाह

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ

बुराइयां	से-को	और माफ़ कर देता है	अपने बन्दों से	तौबा	जो क़ुबूल फ़रमाता है	और वही

وَیَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ۙ وَیَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	वह जो ईमान लाए	और क़ुबूल करता है	25	जो तुम करते हो	और वह जानता है

وَیَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ

और अगर	26	सख़्त	अ़ज़ाब	उन के लिए	और काफ़िरों	अपने फ़ज़्ल से	और उन को ज़ियादा देता है

بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ وَلٰكِنْ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ

अन्दाज़े से	वह उतारता है	और लेकिन	ज़मीन में	तो वह सरकशी करते	अपने बन्दों के लिए	रिज़्क़	कुशादा कर देता अल्लाह

مَّا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ

बारिश	नाज़िल फ़रमाता है	वह जो	और वही	27	देखने वाला	बाख़बर	अपने बन्दों से	बेशक वह	जिस क़द्र वह चाहता है

مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَیَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۸﴾

28	सतूदा सिफ़ात	कारसाज़	और वही	अपनी रहमत	और फैलाता है	जब वह मायूस हो गए	बाद

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ

चौपाए	उन के दरमियान	उस ने फैलाए	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करना	उस की निशानियां	और से

ع ١٠ الربع
وَهُوَ عَلٰی جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا

तो उस के सबब जो	कोई मुसीबत	और जो पहुँची तुम्हें	29	क़ुदरत रखने वाला	जब वह चाहे	उन के जमा करने पर	और वह

كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ﴿۳۰﴾ؕ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ

आ़जिज़ करने वाले	तुम	और नहीं	30	बहुत से	और माफ़ फ़रमा देता है	तुम्हारे हाथों	कमाया

فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۳۱﴾

31	और न कोई मददगार	कोई कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और नहीं तुम्हारे लिए	ज़मीन में

यही है वह जिस की अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से क़राबत की मुहब्बत के सिवा इस पर कोई अजर नहीं मांगता, और जो शख़्स कोई नेकी कमाएगा (करेगा) हम उस के लिए उस में खूबी बढ़ा देंगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, क़द्र दान है। (23) क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर बाँधा है झूट, सो अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा देता, और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक़ को साबित करता है अपने कलिमात से, बेशक वह दिलों की बातों को जानने वाला है। (24) और वही है जो अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और बुराइयों को माफ़ कर देता है, और वह जानता है जो तुम करते हो। (25) और वह (उन की दुआएं) क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, और वह उन को अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (26) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रिज़्क़ कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करते, लेकिन वह अन्दाज़े से जिस क़द्र चाहता है उतारता है, बेशक वह अपने बन्दों (की ज़रुरतों) से बाख़बर देखने वाला है। (27) और उस के बाद जब कि वह नाउम्मीद हो गए तो वही है जो बारिश नाज़िल फ़रमाता है, और अपनी रहमत फैलाता है, और वही है कारसाज़, सतूदा सिफ़ात। (28) और उस की निशानियों में से है पैदा करना आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उस ने उन के दरमियान चौपाए फैलाए, और वह जब चाहे उन के जमा करने पर क़ुदरत रखता है। (29) और तुम्हें जो कोई मुसीबत पहुँची तो वह उस के सबब (पहुँची) जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (किया) और वह बहुत से (गुनाह) माफ़ (ही) कर देता है। (30) और तुम ज़मीन में (अल्लाह तआ़ला को) आजिज़ करने वाले नहीं हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (31)

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝٣٢ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ

हवा	वह ठहरा दे	अगर वह चाहे	32	पहाड़ों जैसे	समन्दर में	जहाज़	और उस की निशानियों से

فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

हर सब्र करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	बेशक उस में	उस की पीठ (सतह) पर	खड़े हुए	तो वह रह जाएं

شَكُوْرٍ ۝٣٣ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۝٣٤ وَّيَعْلَمَ

और जान लें	34	बहुतों को	और माफ़ कर दे	उन के आमाल के सबब	वह उन्हें हलाक कर दे	या	33	शुक्र करने वाले

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝٣٥ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ

पस जो कुछ दी गई तुम्हें	35	ख़लासी	कोई	नहीं उन के लिए	हमारी आयात में	झगड़ते हैं	वह लोग जो

مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

और हमेशा बाक़ी रहने वाला	बेहतर	अल्लाह के पास	और जो	दुनियवी ज़िन्दगी	तो फ़ाइदा	कोई शै

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٣٦ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ

वह बचते हैं	और जो लोग	36	वह भरोसा करते हैं	और अपने रब पर वह	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए

كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۝٣٧

37	वह माफ़ कर देते हैं	वह गुस्से में होते हैं	और जब	और बेहयाइयां	कबीरा (बड़े) गुनाह

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى

मशवरा	और उन का काम	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की	अपने रब का (फ़रमान)	क़ुबूल किया	और जिन लोगों ने

بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٨ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ

उन्हें पहुँचे	जब	और जो लोग	38	वह ख़र्च करते हैं	हम ने अ़ता किया उन्हें	और उस से जो	बाहम

الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝٣٩ وَجَزٰۗؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ

उस जैसी	बुराई	बुराई	और बदला	39	बदला लेते हैं	वह	कोई ज़ुल्म ओ तअ़द्दी

فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠

40	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	अल्लाह पर-ज़िम्मे	तो उस का अजर	और इस्लाह कर दी	माफ़ कर दिया	सो जिस

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ مَا عَلَيْهِمْ

नहीं उन पर	सो यह लोग	अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद	उस ने बदला लिया	और अलबत्ता-जिस

مِّنْ سَبِيْلٍ ۝٤١ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ

लोग	वह ज़ुल्म करते हैं	वह लोग जो	पर	राह (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं	41	कोई राह

وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	नाहक़	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤٢ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝٤٣ ع ٤ ٥

43	बड़ी हिम्मत के काम	अलबत्ता-से	बेशक यह	और माफ़ कर दिया	सब्र किया	और अलबत्ता-जिस	42	दर्दनाक अ़ज़ाब

और उस की निशानियों में से समन्दर में पहाड़ों जैसे जहाज़ हैं। (32) अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो उस की सत्ह पर वह खड़े हुए रह जाएं, बेशक उस में निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (33) या वह उन्हें उन के आमाल के सबब हलाक कर दे और बहुतों को माफ़ कर दे। (34) और जान लें वह लोग जो हमारी आयात में झगड़ते हैं कि उन के लिए कोई ख़लासी (जाए फ़िरार) नहीं। (35) पस तुम्हें जो कुछ कोई शै दी गई है तो वह दुनियवी ज़िन्दगी का (नापाइदार) फ़ाइदा है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (36) और जो लोग बचते है बड़े गुनाहों से और बेहयाइयों से और जब वह गुस्से में होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने क़ुबूल किया अपने रब का फ़रमान और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और उन का काम बाहम मश्वरा (से होता है) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (38) और जो लोग (ऐसे हैं कि) जब उन पर कोई ज़ुल्म ओ अत्याचार पहुँचे तो वह बदला लेते हैं। (39) और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, सो जिस ने माफ़ कर दिया और इस्लाह (दुरुस्ती) कर दी तो उस का अजर अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40) और अलबत्ता जिस ने बदला लिया अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद, सो यह लोग हैं जिन पर कोई राहे (इल्ज़ाम) नहीं। (41) इस के सिवा नहीं कि इल्ज़ाम उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ फ़साद मचाते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (42) और अलबत्ता जिस ने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (43)

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिम (जमा)	और तुम देखोगे	उस के बाद	कोई कारसाज़	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस को

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ ﴿٤٤﴾ وَتَرٰىهُمْ

और तू देखेगा उन्हें	44	कोई राह	लौटना	तरफ़- का	क्या	वह कहेंगे	अ़ज़ाब	वह देखेंगे	जब

يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ

गोशाए चश्म पोशीदा (नीम कुशादा)	से	वह देखते होंगे	ज़िल्लत से	आजिज़ी करते हुए	उस (दोज़ख़) पर	पेश किए जाएंगे वह

وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ

और अपना घराना	अपने आप को	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	ख़सारा पाने वाले	बेशक	जो ईमान लाए (मोमिन)	और कहेंगे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं हैं	45	हमेशा रहने वाला अ़ज़ाब	में	ज़ालिम (जमा)	ख़ूब याद रखो! बेशक	रोज़े क़ियामत

مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	अल्लाह के सिवा	वह मदद दें उन्हें	कोई कारसाज़

مِنْ سَبِيْلٍ ۭ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

उस के लिए	फेरने वाला नहीं	वह दिन	कि आए	इस से क़ब्ल	अपने रब का (फ़रमान)	तुम क़बूल कर लो	46	कोई रास्ता

مِنَ اللّٰهِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَىِٕذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا

वह मुँह फेर लें	फिर अगर	47	कोई इन्कार (रोक टोक करने वाला)	और नहीं तुम्हारे लिए	उस दिन	पनाह	कोई	नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह से

فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۭ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ۭ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا

चखाते हैं हम	जब	और बेशक	पहुँचाना	सिवा	आप पर- ज़िम्मे	नहीं	निगहबान	उन पर	हम ने भेजा तुम्हें	तो नहीं

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ

आगे भेजा	उस के बदले	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	ख़ुश हो जाता है उस से	रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान

اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

और ज़मीन	आस्मानों	अल्लाह के लिए बादशाहत	48	बड़ा नाशुक्रा	तो बेशक इन्सान	उन के हाथों

يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾

49	बेटे	जिस के लिए वह चाहता है	और अ़ता करता है	बेटियां	जिस के लिए वह चाहता है	वह अ़ता करता है	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَاۗءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

जानने वाला	बेशक वह	बाँझ	जिस को वह चाहता है	और कर देता है	और बेटियां	बेटे	जमा कर देता है उन्हें	या

قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَاۗئِ

पीछे से	या	मगर वहि से	कि उस से कलाम करे अल्लाह	किसी बशर को	और नहीं है	50	क़ुदरत रखने वाला

حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

51	हिक्मत वाला	बुलन्द तर	बेशक वह	जो वह चाहे	उस के हुक्म से	पस वह वहि करे	कोई फ़रिश्ता	या वह भेजे	एक पर्दा

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के लिए नहीं उस के बाद कोई कारसाज़, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह अ़ज़ाब देखेंगे (तो) वह कहेंगेः क्या लौटने की कोई राह है? (44)
और तू देखेगा जब वह आजिज़ी करते हुए ज़िल्लत से दोज़ख़ पर पेश किए जाएंगे तो वह देखते होंगे अध खुली आँखों से, और मोमिन कहेंगेः ख़सारा पाने वाले वह हैं जिन्हों ने ख़सारे में डाला अपने आप को और अपने घराने को रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! ज़ालिम बेशक हमेशा रहने वाले अ़ज़ाब में होंगे। (45)
और उन के लिए नहीं है कोई कारसाज़ जो उन्हें अल्लाह के सिवा मदद दे, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (46)
तुम अपने रब का फ़रमान उस से क़ब्ल क़बूल कर लो कि वह दिन आए जिस को अल्लाह (की जानिब) से कोई फेरने वाला नहीं, तुम्हारे लिए नहीं उस दिन कोई पनाह, और तुम्हारे लिए कोई रोक टोक करने वाला नहीं। (47)
फिर अगर वह मुँह फेर लें तो हम ने आप को उन पर नहीं भेजा निगहबान, आप (स) के ज़िम्मे (पैग़ाम) पहुँचाने के सिवा नहीं, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस से ख़ुश हो जाता है, और अगर उन्हें उस के बदले कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा, तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (48)
अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, जो वह चाहता है पैदा करता है, वह अ़ता करता है जिस को वह चाहे बेटियां, और वह अ़ता करता है जिस के लिए वह चाहता है बेटे। (49)
या उन्हें जमा कर देता (जोड़े देता है) बेटे और बेटियां, और जिस को वह चाहता है बाँझ (बेऔलाद) कर देता है, बेशक वह जानने वाला क़ुदरत रखने वाला है। (50)
और किसी बशर की (मजाल) नहीं कि अल्लाह उस से कलाम करे मगर वहि (इशारे) से या पर्दे के पीछे से, या वह कोई फ़रिश्ता भेजे, पस वह उस के हुक्म से जो (अल्लाह) चाहे वह वहि करे (पैग़ाम पहुँचा दे), बेशक वह बुलन्द तर, हिक्मत वाला है। (51)

وَكَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَآ اِلَيۡكَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا ؕ مَا كُنۡتَ تَدۡرِىۡ مَا الۡكِتٰبُ

क्या है किताब	तुम न जानते थे	अपने हुक्म से	कुरआन	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	और उसी तरह

وَلَا الۡاِيۡمَانُ وَلٰكِنۡ جَعَلۡنٰهُ نُوۡرًا نَّهۡدِىۡ بِهٖ مَنۡ نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ

अपने बन्दों में से	जिस को हम चाहते हैं	हम हिदायत देते हैं उस से	नूर	हम ने बना दिया उसे	और लेकिन	और न ईमान

وَاِنَّكَ لَتَهۡدِىۡۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۙ (٥٢) صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىۡ لَهٗ مَا

जो कुछ	वह जिस के लिए	रास्ता अल्लाह का	52	सीधा	रास्ता	तरफ़	ज़रूर रहनुमाई करते हो	और बेशक तुम

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيۡرُ الۡاُمُوۡرُ (٥٣) ع ٥ ٦

53	तमाम काम	बाज़गश्त	अल्लाह की तरफ़	याद रखें	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

آيَاتُهَا ٨٩ ❀ سُوۡرَةُ الزُّخۡرُفِ (٤٣) ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7	(43) सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़ चमक-दमक	आयात 89

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ۚ (١) وَالۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۙ (٢) اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمۡ ص ١١ عدد المتقدمين ١٢

ताकि तुम	अरबी ज़बान	कुरआन	हम ने इसे बनाया	बेशक हम	2	वाज़ेह	क़सम है किताब	1	हा-मीम

تَعۡقِلُوۡنَ ۚ (٣) وَاِنَّهٗ فِىۡۤ اُمِّ الۡكِتٰبِ لَدَيۡنَا لَعَلِىٌّ حَكِيۡمٌ ؕ (٤) اَفَنَضۡرِبُ

क्या हम हटा लें	4	बाहिक्मत	बुलन्द मरतबा	हमारे पास	असल किताब (लौहे महफ़ूज़)	में	और बेशक वह	3	समझो

عَنۡكُمُ الذِّكۡرَ صَفۡحًا اَنۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا مُّسۡرِفِيۡنَ (٥) وَكَمۡ اَرۡسَلۡنَا

और कितने ही भेजे हम ने	5	हद से गुज़रने वाले	लोग	तुम हो	कि	एराज़ कर के	नसीहत	तुम से

مِنۡ نَّبِىٍّ فِى الۡاَوَّلِيۡنَ (٦) وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ نَّبِىٍّ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ

उस से	वह थे	मगर	कोई नबी	और नहीं आया उन के पास	6	पहले लोगों में	नबी

يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ (٧) فَاَهۡلَكۡنَاۤ اَشَدَّ مِنۡهُمۡ بَطۡشًا وَّمَضٰى مَثَلُ

मिसाल	और गुज़र चुकी	पकड़	उन से	सख़्त	पस हम ने हलाक किया	7	मज़ाक़ करते

الۡاَوَّلِيۡنَ (٨) وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ مَّنۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ لَيَقُوۡلُنَّ

तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	किस	तुम उन से पूछो	और अगर	8	पहले लोग

خَلَقَهُنَّ الۡعَزِيۡزُ الۡعَلِيۡمُ ۙ (٩) الَّذِىۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ مَهۡدًا

फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस	9	इल्म वाला	ग़ालिब	उन्हें पैदा किया

وَّجَعَلَ لَكُمۡ فِيۡهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ۚ (١٠) وَالَّذِىۡ نَزَّلَ

उतारा	और वह जिस	10	तुम राह पाओ	ताकि तुम	रास्ते-सबील	उस में	तुम्हारे लिए	और बनाए

مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنۡشَرۡنَا بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخۡرَجُوۡنَ (١١)

11	तुम निकाले जाओगे	उसी तरह	मुर्दा ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया हम ने	एक अंदाज़े से	पानी	आस्मान से

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ अपने हुक्म से कुरआन को वहि किया, आप (स) न जानते थे कि किताब क्या है? और न ईमान (की तफ़सील) और लेकिन हम ने उसे नूर बना दिया, उस से हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं हिदायत देते हैं, और बेशक आप (स) ज़रूर रहनुमाई करते हैं सीधे रास्ते की तरफ़। **(52)** (यानी) अल्लाह का रास्ता, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, याद रखें! तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। **(53)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। **(1)** क़सम है वाज़ेह किताब की। **(2)** बेशक हम ने उसे बनाया अरबी ज़बान में कुरआन, ताकि तुम समझो। **(3)** और बेशक वह (कुरआन) हमारे पास लौहे महफ़ूज़ में है, बुलन्द मरतबा, बाहिक्मत। **(4)** क्या हम यह नसीहत तुम से एराज़ कर के इस लिए हटा लें कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो। **(5)** और हम ने पहले लोगों में बहुत से नबी भेजे। **(6)** और उन के पास नहीं आया कोई नबी, मगर वह उस से ठठा करते थे। **(7)** पस हम ने उन (अहले मक्का) से ज़ियादा सख़्त पकड़ (ताक़त) वाले लोगों को हलाक किया और गुज़र चुकी है पहले लोगों की मिसाल। **(8)** और अगर तुम उन से पूछो कि किस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "उन्हें पैदा किया है ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह) ने"। **(9)** वह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे लिए उस में बनाए रास्ते ताकि तुम राह पाओ। **(10)** और वह अल्लाह जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से ज़िन्दा किया मुर्दा ज़मीन को, उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। **(11)**

وَالَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ

और वह जिस	पैदा किए	जोड़े	उन सब के	और बनाई	तुम्हारे लिए	कश्तियां	और चौपाए

مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿١٢﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا

जिस	तुम सवार होते हो	12	ताकि तुम ठीक बैठो	उन की पीठों पर	फिर	तुम याद करो	नेमत	अपना रब	जब

اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا

तुम ठीक बैठ जाओ	उस पर	और तुम कहो	पाक है	वह ज़ात जिस	मुसख़्ख़र किया हमारे लिए	इस	और न थे हम

لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿١٣﴾ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوْا لَهٗ

इस को	क़ाबू में लाने वाले	13	और बेशक हम	तरफ़	अपना रब	ज़रूर लौट कर जाने वाले	14	उन्हों ने बना लिया	उस के लिए

مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ ع ١٥

उस के बन्दों में से	हिस्सा (लख़्ते जिगर)	बेशक इन्सान	नाशुक्रा	खुले तौर पर	15	क्या उस ने बना लीं	उस से जो उस ने पैदा किया

بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ

बेटियां	और तुम्हें मख़सूस किया	बेटों के साथ	16	और जब	ख़ुशख़बरी दी जाए	उन में से एक	उस की जो	उस ने बयान की

لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا

रहमान (अल्लाह) के लिए	मिसाल	हो जाता है उस का चेहरा	सियाह	और वह	ग़मगीन	17	किया जो	पर्वरिश पाए

فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ

ज़ेवर में	और वह	झगड़े (बहस मुबाहसा) में	ग़ैर वाज़ेह	18	और उन्हों ने ठहरा लिया	फ़रिश्ते

الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ۭ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ۭ سَتُكْتَبُ

वह जो	वह	रहमान (अल्लाह के) बन्दे	औरतें	क्या तुम मौजूद थे	उन की पैदाइश	अभी लिख लिया जाएगा

شَهَادَتُهُمْ وَيُسْــَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ۭ

उन की गवाही (दावा)	और उन से पूछा जाएगा	19	और वह कहते हैं	अगर चाहता	रहमान (अल्लाह)	हम न इबादत करते उन की

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۤ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ

उन्हें नहीं	उस का	कुछ इल्म	नहीं	वह	मगर-सिर्फ़	अटकल दौड़ाते हैं	20	क्या	हम ने दी उन्हें

كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ

कोई किताब	इस से क़ब्ल	सो वह उस को	थामे हुए हैं	21	बल्कि	वह कहते हैं	बेशक हम ने पाया

اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

अपने बाप दादा	एक तरीक़े पर	और बेशक हम	उन के नक़्शे क़दम पर	राह पाने वाले (चल रहे हैं)	22	और उसी तरह

مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ

नहीं भेजा हम ने	इस से पहले	किसी बस्ती में	कोई डर सुनाने वाला	मगर	कहा	उस के ख़ुशहाल

اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

बेशक हम ने पाया	अपने बाप दादा	एक तरीक़े पर	और बेशक हम	उन के नक़्शे क़दम पर	पैरवी करते हैं	23

और वह जिस ने उन सब के जोड़े बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं कश्तियां और चौपाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12)

ताकि तुम उन की पीठों पर ठीक तौर से बैठो, फिर तुम याद करो अपने रब की नेमत को, जब तुम उस पर ठीक बैठ जाओ, और तुम कहो: पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया और हम इस को क़ाबू में लाने वाले न थे। (13)

और बेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जाने वाले हैं। (14)

और उन्हों ने उस के बन्दों में से उस के लिए बना लिया है जुज़ (लख़्ते जिगर), बेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है। (15)

क्या उस ने अपनी मख़्लूक़ में से (अपने लिए) बेटियां बना लीं? और तुम्हें मख़सूस किया (नवाज़ा) बेटों के साथ? (16)

और जब उन में से किसी को उस (बेटी) की ख़ुशख़बरी दी जाए जिस की मिसाल उस ने अल्लाह के लिए दी तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है, और वह ग़म से भर जाता है। (17)

क्या वह (औलाद) जो ज़ेवर में पर्वरिश पाए और वह बहस मुबाहसा में ग़ैर वाज़ेह हो (अल्लाह के हिस्से में आई)। (18)

और उन्हों ने ठहराया फ़रिश्तों को औरतें, जो अल्लाह के बन्दे हैं, क्या तुम उन की पैदाइश (के वक़्त) मौजूद थे? उन का यह दावा अभी लिख लिया जाएगा और क़ियामत के (दिन) उन से पूछा जाएगा। (19)

और वह कहते हैं: अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इबादत न करते, उन्हें उस का कुछ इल्म नहीं, वह तो सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (20)

क्या हम ने उन्हें उस से क़ब्ल कोई किताब दी है जिस को वह थामे हुए हैं (उस से इस्तिदलाल करते हैं)। (21)

बल्कि वह कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम पर चल रहे हैं। (22)

और उसी तरह हम ने आप (स) से पहले किसी बस्ती में कोई डर सुनाने वाला नहीं भेजा, मगर उस के ख़ुशहाल लोगों ने कहा, बेशक हम ने पाया अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम की पैरवी करते हैं। (23)

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا

बेशक हम	वह बोले	अपने बाप दादा	उस पर	तुम ने पाया	उस से जिस	बेहतर राह बताने वाला	क्या अगरचे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ	(नबी ने) कहा

بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

हुआ	कैसा	सो देखो	उन से	तो हम ने बदला लिया	24	इन्कार करने वाले	जिस के साथ तुम भेजे गए	उस पर

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖۤ اِنَّنِيْ ع ٢ ١٠ ٨ النصف

बेशक मैं	और अपनी क़ौम	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	25	झुटलाने वालों का	अन्जाम

بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

27	जल्द मुझे हिदायत देगा	तो बेशक वह	मुझे पैदा किया	मगर वह जिस ने	26	उस से जिस की तुम परस्तिश करते हो	बेज़ार

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ

बल्कि मैं ने सामाने ज़ीस्त दिया	28	रुजूअ करते रहें	ताकि वह	अपनी नस्ल में	बाक़ी रहने वाली	बात	और उस ने किया उस को

هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا

और जब	29	साफ़ साफ़ बयान करने वाला	और रसूल	हक़ (क़ुरआन)	आ गया उन के पास	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	उन को

جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا

और वह बोले	30	इन्कार करने वाले	इस का	और बेशक हम	जादू	यह	वह कहने लगे	हक़	आ गया उन के पास

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ

क्या वह	31	बड़े	दो बस्तियां	से	किसी आदमी पर	यह क़ुरआन	क्यों न उतारा गया

يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	उन की रोज़ी	उन के दरमियान	हम ने तक़सीम की	हम	तुम्हारा रब	रहमत	तक़सीम करते हैं

وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

उन में से बाज़ (एक) दूसरे को	ताकि बनाए	दरजे	बाज़ (दूसरे) पर	उन में से बाज़ (एक)	और हम ने बुलन्द किए

سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَا

और अगर (यह) न होता	32	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और तुम्हारे रब की रहमत	ख़िदमतगार

اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ

रहमान (अल्लाह) का	उनके लिए जो कुफ़्र करते हैं	तो हम बनाते	एक उम्मत (तरीक़ा)	तमाम लोग	कि हो जाएंगे

لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ

उन के घरों के लिए	33	वह चढ़ते	जिन पर	और सीढ़ियां	चाँदी से-की	छत	उनके घरों के लिए

اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا

मगर	यह सब	और नहीं	और आराइश करते	34	वह तकिया लगाते	जिन पर	और तख़्त	दरवाज़े

مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾ ع ٣ ٩

35	परहेज़गारों के लिए	तुम्हारे रब के नज़दीक	और आख़िरत	दुनिया की ज़िन्दगी	पूंजी

नबी (स) ने कहाः क्या (उस सूरत में भी) अगरचे मैं बेहतर राह बतलाने वाला (दीने हक़ लाया) हूँ उस से जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को पाया? वह बोलेः बेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस के साथ तुम भेजे गए हो। (24) तो हम ने उन से बदला लिया, सो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (25) और (याद करो) जब इब्राहीम (अ) ने अपने बाप दादा और अपनी क़ौम को कहाः बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ जिस की तुम परस्तिश करते हो, (26) मगर (हाँ) जिस ने मुझे पैदा किया, तो बेशक वह जल्द मुझे हिदायत देगा। (27) और उस (इब्राहीम अ) ने उस को किया अपनी नस्ल में बाक़ी रहने वाली बात, ताकि वह रुजूअ करते रहें। (28) बल्कि मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को सामाने ज़ीस्त दिया, यहां तक कि उन के पास क़ुरआन आ गया, और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल। (29) और जब उन के पास हक़ आया तो वह कहने लगे कि यह जादू है, और बेशक हम इस का इन्कार करने वाले हैं। (30) और वह बोले कि यह क़ुरआन क्यों न नाज़िल किया गया दो बस्तियों (मक्का या ताइफ़) के किसी बड़े आदमी पर? (31) क्या वह तुम्हारे रब की रहमत तक़सीम करते हैं, और हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुनिया की ज़िन्दगी में तक़सीम की है, और हम ने उन में से एक के दरजे दूसरे पर बुलन्द किए हैं ताकि उन में से एक दूसरे को ख़िदमतगार बनाए, और तुम्हारे रब की रहमत उस से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (32) और अगर (एहतिमाल) न होता कि तमाम लोग एक तरीक़े पर हो जाएंगे तो हम बनाते उन के लिए जो कुफ़्र करते हैं अल्लाह का। उन के घरों के लिए चाँदी की छत और सीढ़ियां जिन पर वह चढ़ते हैं (33) और उन के घरों के दरवाज़े और तख़्त जिन पर वह तकिया लगाते हैं। (34) और (ख़ूब) आराइश करते, और यह सब (कुछ) नहीं मगर दुनिया की ज़िन्दगी की पूंजी है, और तुम्हारे रब के नज़दीक आख़िरत परहेज़गारों के लिए है। (35)

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

36	साथी	उस का	तो वह	एक शैतान	हम मुक़र्रर (मुसल्लत) कर देते हैं उस के लिए	रहमान (अल्लाह) की याद	से	ग़फ़लत करे	और जो

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	हिदायत याफ़्ता	कि वह	और वह गुमान करते हैं	रास्ते से	अलबत्ता वह रोकते हैं उन्हें	और बेशक वह

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ

मशरिक़ ओ मग़रिब	दूरी	और तेरे दरमियान	मेरे दरमियान	ऐ काश	वह कहेगा	वह आएंगे हमारे पास	जब	यहां तक कि

فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

अ़ज़ाब में	यह कि तुम	जब ज़ुल्म कर चुके तुम ने	आज	और हरगिज़ नफ़ा न देगा तुम्हें	38	साथी	तू बुरा

مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ

और जो हो	अँधों	या राह दिखाएंगे	बहरों	सुनाएंगे	तो क्या आप (स)	39	मुशतरिक हो

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

41	इन्तिक़ाम लेने वाले	उन से	तो बेशक हम	आप (स) को	ले जाएं	फिर अगर	40	सरीह गुमराही	में

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ

पस आप (स) मज़बूती से थाम लें	42	क़ुदरत रखने वाले (क़ादिर) हैं	उन पर	तो बेशक हम	हम ने वादा किया उन से	वह जो	या हम दिखादें तुम्हें

بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ

नसीहत (नामा)	और बेशक यह	43	सीधा	रास्ता	पर	बेशक आप (स)	आप (स) की तरफ़	वहि किया गया	वह जो

لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	जो	और पूछ लें	44	तुम से पूछा जाएगा	और अनक़रीब	और आप (स) की क़ौम के लिए	आप (स) के लिए

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ ۫ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً

कोई माबूद	रहमान (अल्लाह) के सिवा	से	क्या हम ने मुक़र्रर किए	हमारे रसूलों में से	आप (स) से पहले

ع ١٠ ١٠ يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उस के सरदार	फ़िरऔन	तरफ़	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	45	उन की इबादत के लिए

فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ

वह	नागहां	हमारी निशानियों के साथ	वह आया	फिर जब	46	तमाम जहानों का परवरदिगार	बेशक मैं रसूल	तो उस ने कहा

مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫

उस की बहन (दूसरी निशानी)	से	बड़ी	मगर वह	कोई निशानी	और हम उन्हें दिखाते थे	47	उस से (उन निशानियों पर) हँसने लगे

وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ

ऐ	और उन्हों ने कहा	48	वह रुजूअ़ करें	ताकि वह	अ़ज़ाब में	और हम ने गिरफ़्तार किया उन्हें

السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता हिदायत पाने वाले	बेशक हम	तेरे पास	उस अ़हद के सबब जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	जादूगर

और जो कोई अल्लाह की याद से
ग़फ़लत करे, हम मुसल्लत कर देते
हैं उस के लिए एक शैतान, तो वह
उस का साथी हो जाता है। (36)
और बेशक वह उन्हें (अल्लाह के) रास्ते
से रोकते हैं, और वह गुमान करते
हैं कि वह हिदायत याफ़्ता हैं। (37)
यहां तक कि जब वह हमारे पास
आएंगे तो वह (अपने शैतान साथी
से) कहेगा: ऐ काश मेरे और तेरे
दरमियान मशरिक़ ओ मग़रिब की दूरी
होती, तू बुरा साथी निकला। (38)
और जब कि तुम ज़ुल्म कर चुके तो
आज तुम्हें यह हरगिज़ नफ़ा न देगा
कि तुम अ़ज़ाब में मुशतरिक हो। (39)
तो क्या आप (स) बहरों को सुनाएंगे
या अँधों को राह दिखाएंगे? और उस
को जो सरीह गुमराही में हो। (40)
फिर अगर हम आप (स) को (दुनिया
से) ले जाएं तो बेशक हम (फिर भी)
उन से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (41)
या हम आप (स) को दिखा दें वह
जो हम ने उन से वादा किया है तो
बेशक हम उन पर क़ादिर हैं। (42)
पस आप (स) वह मज़बूती से थाम
लें जो आप (स) की तरफ़ वहि
किया गया है, बेशक आप (स)
सीधे रास्ते पर हैं। (43)
और बेशक यह (क़ुरआन) एक
नसीहत नामा है आप (स) के लिए
और आप (स) की क़ौम के लिए। और
अ़नक़रीब तुम से पूछा जाएगा। (44)
आप (स) हमारे उन रसूलों से पूछ लें
जो हम ने आप से पहले भेजे:
क्या हम ने अल्लाह के सिवा कोई
माबूद मुक़र्रर किए थे जिन की
इबादत की जाए। (45)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को
अपनी निशानियों के साथ भेजा
फ़िरऔन और उस के सरदारों की
तरफ़, तो उस ने कहा: बेशक मैं
तमाम जहानों के परवरदिगार का
रसूल हूँ। (46)
फिर जब वह हमारी निशानियों के
साथ उन के पास आया तो नागहां वह
उन निशानियों पर हँसने लगे। (47)
और हम उन्हें कोई निशानी नहीं
दिखाते थे, मगर वह पहली निशानी
से बड़ी होती, हम ने उन्हें अ़ज़ाब
में गिरफ़्तार किया ताकि वह (हक़
की तरफ़) रुजूअ़ करें। (48)
और उन्हों ने कहा: ऐ जादूगर!
हमारे लिए अपने रब से दुआ कर
उस अ़हद के सबब जो तेरे पास
है, बेशक हम हिदायत पाने वाले हैं
(हिदायत पा लेंगे)। (49)

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	और पुकारा	50	अ़हद तोड़ गए	नागहां वह	अ़ज़ाब	उन से	हम ने खोला (हटा दिया)	फिर जब

فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ

नहरें	और यह	मिस्र की बादशाहत	क्या नहीं मेरे लिए	उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम	में

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ

वह	वह जो	उस से	बेहतर	क्या-बल्कि मैं	51	देखते तुम	तो क्या नहीं	मेरे नीचे से	जारी हैं

مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ

सोने के	कंगन	उस पर	डाले गए	तो क्यों न	52	साफ़ गुफ़्तगू करता	और वह मालूम नहीं होता	कम क़द्र

اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۭ

तो उन्हों ने उस की इताअ़त की	अपनी क़ौम	पस उस ने बेअ़क़्ल कर दिया	53	परा बान्ध कर	फ़रिश्ते	उस के साथ	या आए

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ

पस हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	उन से	हम ने इन्तिक़ाम लिया	उन्हों ने गुस्सा दिलाया हमें	फिर जब	54	नाफ़रमान	लोग	थे	बेशक वह

اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۙ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ ع وَلَمَّا ضُرِبَ ع ١١ ١١

बयान की गई	और जब	56	बाद में आने वाले	पेश रौ (गए गुज़रे) और मिसाल (दास्तान)	तो हम ने कर दिया उन्हें	55	सब

ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ

बेहतर	क्या हमारे माबूद	और वह बोले	57	उस से (ख़ुशी से) चिल्लाने लगते हैं	यका यक तुम्हारी क़ौम	मिसाल	ईसा इब्ने मरयम

اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنْ هُوَ

नहीं वह (ईसा अ)	58	झगड़ालू	लोग	बल्कि वह	मगर (सिर्फ़) झगड़ने को	तुम्हारे लिए	नहीं वह बयान करते उस को	या वह

اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ﴿٥٩﴾ ۭ وَلَوْ نَشَاۗءُ

और अगर हम चाहते	59	बनी इस्राईल के लिए	एक मिसाल	और हम ने बनाया उस को	उस पर	हम ने इन्आ़म क्या	एक बन्दा	सिर्फ़

لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ

एक निशानी	और बेशक वह	60	वह (तुम्हारे) जांनशीन होते	ज़मीन में	फ़रिश्ते	तुम में से	अलबत्ता हम करते

لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

61	सीधा	रास्ता	यह	और मेरी पैरवी करो	उस में	तो हरगिज़ शक न करो तुम	क़ियामत की

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا

और जब	62	दुश्मन खुला	तुम्हारे लिए	बेशक वह	शैतान	और रोक न दे तुम्हें

جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ

और इस लिए कि बयान कर दूँ	हिक्मत के साथ	तहक़ीक़ मैं आया हूँ तुम्हारे पास	उस ने कहा	खुली निशानियों के साथ	ईसा (अ)	आए

لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

63	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो अल्लाह से	उस में	तुम इख़्तिलाफ़ करते हो	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए

फिर जब हम ने उन से अ़ज़ाब हटा दिया तो नागहां वह अ़हद तोड़ गए। (50) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में पुकारा (मनादी की), उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं? और यह नहरें जारी हैं मेरे (महलात के) नीचे से, तो क्या तुम नहीं देखते? (51) बल्कि मैं उस से बेहतर हूँ जो कम क़द्र है, और वह मालूम नहीं होता साफ़ गुफ़्तगू करता। (52) तो उस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उस के साथ फ़रिश्ते (क्यों न) आए परा बान्ध कर। (53) पस उस ने अपनी क़ौम को बेअ़क़्ल कर दिया, तो उन्हों ने उस की इताअ़त की, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (54) फिर जब उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (55) तो हम ने उन्हें गए गुज़रे कर दिया, और बाद में आने वालों के लिए एक दास्तान। (56) और जब ईसा (अ) इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो यकायक तुम्हारी क़ौम उस से ख़ुशी के मारे चिल्लाने लगी। (57) वह बोले: क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या वह (ईसा इब्ने मरयम)? वह उस को तुम्हारे सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं, बल्कि वह तो हैं ही झगड़ालू। (58) ईसा (अ) सिर्फ़ एक बन्दे हैं, हम ने इन्आ़म किया उन पर और हम ने उन्हें बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (59) और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते पैदा करते ज़मीन में, वह तुम्हारे जांनशीन होते। (60) और बेशक वह क़ियामत की एक निशानी है, तो तुम हरगिज़ उस में शक न करो, और मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61) और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है। (62) और जब ईसा (अ) आए खुली निशानियों के साथ, तो उन्हों ने कहा: तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास हिक्मत के साथ आया हूँ, और इस लिए कि मैं तुम्हारे लिए वह बाज़ बातें बयान कर दूँ जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (63)

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

64	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	वह	बेशक अल्लाह

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

जिन्हों ने ज़ुल्म किया	उन लोगों के लिए	सो ख़राबी	आपस में	गिरोह (जमा)	फिर इख़्तिलाफ़ डाल लिया

مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

वह उन पर आ जाए	कि	क़ियामत	सिर्फ़	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	65	दिन दुख देने वाला	अज़ाब से

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

बाज़ से (एक)	उन के बाज़ (दूसरे)	उस दिन	तमाम दोस्त	66	शऊर न रखते हूँ	और वह	अचानक

ع ٦ ١١ ١٢ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ

और न तुम	आज	तुम पर	कोई ख़ौफ़ नहीं	ऐ मेरे बन्दो	67	परहेज़गारों	सिवा	दुश्मन

تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا

तुम दाख़िल हो जाओ	69	मुसलिम (जमा)	और वह थे	हमारी आयात पर	जो ईमान लाए	68	ग़मगीन होंगे

الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ

रिकाबियां	उन पर	लिए फिरेंगे	70	तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे	और तुम्हारी बीवियां	तुम	जन्नत

مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ

और लज़्ज़त होगी	जी (जमा)	वह जो चाहेंगे	और उस में	और आबख़ोरे	सोने की

الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِىْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا

तुम वारिस बनाए गए उस के	वह जिस	जन्नत	और यह	71	हमेशा रहोगे	उस में	और तुम	आँखें

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ

बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	72	जो तुम करते थे	उस के बदले

مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	हमेशा रहेंगे	अज़ाबे जहन्नम	में	मुजरिम (जमा)	बेशक	73	तुम खाते हो	उस से

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ

और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर	75	नाउम्मीद पड़े रहेंगे	और वह उस में	उन से	हल्का न किया जाएगा

وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا

अच्छा हो कि मौत का फ़ैसला कर दे हम पर (हमारी)	ऐ मालिक	और वह पुकारेंगे	76	ज़ालिम (जमा)	वह	वह थे	और लेकिन (बल्कि)

رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ

लेकिन	हक़ के साथ	तहक़ीक़ हम आए तुम्हारे पास	77	हमेशा रहने वाले	बेशक तुम	वह कहेगा	तेरा रब

اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	ठहराने वाले	तो बेशक हम	कोई बात	उन्हों ने ठहरा ली	क्या	78	नापसंद करने वाले	हक़ से - को	तुम में से अक्सर

बेशक अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह रास्ता है सीधा। (64) फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया, सो उन लोगों के लिए ख़राबी है जिन्हों ने ज़ुल्म किया, अज़ाब से दुख देने वाले दिन के। (65) क्या वह सिर्फ़ क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं कि वह उन पर अचानक आ जाए और वह शऊर (ख़बर भी) न रखते हूँ। (66) परहेज़गारों के सिवा उस दिन तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे। (67) ऐ मेरे बन्दो! तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं आज के दिन और न तुम ग़मगीन होंगे। (68) जो लोग हमारी आयात पर ईमान लाए और वह मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे। (69) तुम दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां जन्नत में, तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे। (70) उन पर सोने की रिकाबियां और आबख़ोरे लिए फिरेंगे, और उस में (मौजूद होगा) जो (उन के) दिल चाहेंगे और आँखों की लज़्ज़त (होगी), और तुम उस में हमेशा रहोगे। (71) और यह वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन (आमाल) के बदले जो तुम करते थे। (72) तुम्हारे लिए उस में बहुत मेवे हैं, उन में से तुम खाओगे। (73) बेशक मुजरिम जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74) उन से हल्का न किया जाएगा, और वह उस में नाउम्मीद पड़े रहेंगे। (75) और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। (76) और वह पुकारेंगे ए मालिक (दारोग़ाए जहन्नम)! अच्छा हो कि तेरा रब हमारी मौत का फ़ैसला करदे, वह कहेगाः बेशक तुम (इसी हाल में) हमेशा रहने वाले हो। (77) तहक़ीक़ हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए, लेकिन तुम में से अक्सर हक़ को नापसंद करने वाले थे। (78) क्या उन्हों ने कोई बात ठहरा ली है तो बेशक हम (भी) ठहराने वाले हैं। (79)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम नहीं सुनते उन की पोशीदा बातों और उन की सरगोशियों को, हाँ (क्यों नहीं) हमारे फ़रिश्ते उन के पास लिखते हैं। **(80)** आप (स) फ़रमा दें: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो मैं (उस का) पहला इबादत करने वाला होता। **(81)** आस्मानों और ज़मीन का रब, अर्श का रब, उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। **(82)** पस आप (स) उन को छोड़ दें कि वह बेहूदा बातें करें और खेलें यहां तक कि वह उस दिन को पा लें जिस का उन से वादा किया जाता है। **(83)** और वही जो आस्मानों में माबूद है और ज़मीन में माबूद है, और वही हिक्मत वाला, इल्म वाला है। **(84)** और बड़ी बरकत वाला और जिस के लिए बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, और उस के पास है क़ियामत का इल्म, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। **(85)** और वह जिन को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उस के जिस ने गवाही दी हक़ की और वह जानते हैं। **(86)** और अगर आप (स) उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने" तो वह किधर उलटे फिरे जाते हैं? **(87)** क़सम है (रसूल के यह) कहने की कि ऐ मेरे रब! यह लोग ईमान नहीं लाएंगे। **(88)** तो आप (स) उन से मुँह फेर लें और सलाम कहें, पस जल्द वह (अन्जाम) जान लेंगे। **(89)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। **(1)** क़सम है वाज़ेह किताब की। **(2)** बेशक हम ने उसे एक मुबारक रात (लैलतल क़द्र) में नाज़िल किया, बेशक हम ही हैं डराने वाले। **(3)** उस (रात) में फ़ैसल किया जाता है हर अम्र हिक्मत वाला। **(4)**

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ

उन के पास	और हमारे फ़रिश्ते	हाँ	और उन की सरगोशियां	उन की पोशीदा बातें	हम नहीं सुनते	कि हम	क्या वह गुमान करते हैं

يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

81	इबादत करने वाला	पहला	तो मैं	कोई बेटा	रहमान (अल्लाह का)	अगर होता	फ़रमा दें	80	लिखते हैं

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह बयान करते हैं	उस से जो	अर्श का रब	और ज़मीन	आस्मानों का रब	पाक है

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

83	उन को वादा किया जाता है	वह जिस	उस दिन को	वह पा लें	यहां तक	और खेलें	वह बेहूदा बातें करें	पस छोड़ दें उन को

وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَاۗءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ

हिक्मत वाला	और वही	माबूद	और ज़मीन में	माबूद	आस्मानों में	वह जो	और वही

الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उस के लिए	वह जो	और बड़ी बरकत वाला	84	इल्म वाला

وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ

वह जिन को	और इख़्तियार नहीं रखते	85	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	क़ियामत का इल्म	और उस के पास

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ

और वह	हक़ की	जिस ने गवाही दी	सिवाए	शफ़ाअत	उस के सिवा	वह पुकारते हैं

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى

तो किधर	तो वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह	पैदा किया उन्हें	किस	आप (स) उन से पूछें	और अगर	86	जानते हैं

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ وقف لازم

88	ईमान नहीं लाएंगे	लोग	यह	बेशक	ऐ मेरे रब	क़सम उस के कहने की	87	वह उलटे फिरे जाते हैं

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۭ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ ع ٢٢ ١٣

89	पस जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा	सलाम	और कहें	उन से	तो आप (स) मुँह फेर लें

آيَاتُهَا ٥٩ ❀ سُوْرَةُ الدُّخَانِ (٤٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 | (44) सूरतुद दुख़ान — धुवाँ | आयात 59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ عدد المتقدمين ١٢ ع ١٢

एक मुबारक रात	में	बेशक हम ने नाज़िल किया इसे	2	वाज़ेह	क़सम किताब	1	हा-मीम

اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	हर अम्र	फ़ैसल किया जाता है	उस में	3	डराने वाले	बेशक हम हैं

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝٥ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ

हुक्म हो कर	हमारे पास से	बेशक हम हैं	भेजने वाले	5	रहमत	से	तुम्हारा रब

وقف لازم

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ

बेशक वही	सुनने वाला	जानने वाला	6	रब है आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उन दोनों के दरमियान

اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٧ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

अगर तुम हो	यक़ीन करने वाले	7	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	वह जान डालता है और जान निकालता है	तुम्हारा रब	और रब	तुम्हारे बाप दादा

الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝٩ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِى السَّمَآءُ

पहले	8	बल्कि वह	शक में	खेलते हैं	9	तो तुम इन्तिज़ार करो	उस दिन	आस्मान लाए

بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١١ رَبَّنَا اكْشِفْ

धुआँ	ज़ाहिर	10	वह ढांप लेगा	लोगों	यह	अ़ज़ाब दर्दनाक	11	ऐ हमारे रब	खोल (दूर) कर दे

عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ

हम से	अ़ज़ाब	बेशक हम	ईमान ले आएंगे	12	कहां	उन को	नसीहत	और तहक़ीक़ आ चुका उन के पास

وقف لازم

رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝١٤ اِنَّا

रसूल खोल खोल कर बयान करने वाला	13	फिर	वह फिर गए	उस से	और कहने लगे	सिखाया हुआ	दीवाना	14	बेशक हम

وقف لازم

كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝١٥ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ

खोलने वाले	अ़ज़ाब	थोड़ा	तुम बेशक (पिछली) हालत पर लौट आने वाले हो	15	जिस दिन	हम पकड़ेंगे	पकड़

الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝١٦ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ

बड़ी (सख़्त)	बेशक हम	इन्तिक़ाम लेने वाले	16	और हम आज़मा चुके हैं	इन से क़ब्ल	क़ौमे फ़िरऔन	और आया उन के पास

رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۝١٧ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٨

एक रसूल	करीम (आली क़द्र)	17	कि हवाले कर दो	मेरे	बन्दे अल्लाह के	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	एक रसूल अमीन	18

وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٩ وَاِنِّيْ

और यह कि	तुम सरकशी न करो	अल्लाह पर (के मुक़ाबिल)	बेशक मैं	आया हूँ तुम्हारे पास	दलील के साथ	वाज़ेह	19	और बेशक मैं

عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝٢٠ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝٢١

पनाह चाहता हूँ	अपने रब की	और तुम्हारा रब	कि	तुम मुझे संगसार कर दो	20	और अगर	तुम ईमान नहीं लाते	मुझ पर	तो एक किनारे हो जाओ मुझ से	21

الثلثة

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝٢٢ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا

तो उस ने दुआ की अपने रब से	कि	यह	मुजरिम लोग	22	तो तू ले जा मेरे बन्दों को	रात में

اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٢٣ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝٢٤

बेशक तुम	पीछा किए जाओगे	23	और छोड़ जाओ	दर्या	ठहरा हुआ	बेशक वह	एक लशकर	डूबने वाले	24

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٢٥ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٢٦

वह कितने (ही) छोड़ गए	से	बाग़ात	और चश्मे	25	और खेतियां	और मकान नफ़ीस	26

हुक्म हो कर हमारे पास से। बेशक
हम ही हैं (रसूल) भेजने वाले। (5)
रहमत आप (स) के रब की तरफ़
से, बेशक वही है सुनने वाला
जानने वाला। (6)
रब है आस्मानों का और ज़मीन का
और जो उन के दरमियान है, अगर
तुम हो यक़ीन करने वाले। (7)
उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही
जान डालता है, वही जान निकालता
है, और (वही) रब है तुम्हारा और
तुम्हारे पहले बाप दादा का। (8)
बल्कि वह शक में पड़े खेलते हैं। (9)
तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करो कि
आस्मान ज़ाहिर धुआँ लाएगा, (10)
और ढांप लेगा (छा जाएगा) लोगों
पर, यह है दर्दनाक अ़ज़ाब। (11)
(अब वह कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम
से अ़ज़ाब दूर कर दे, बेशक हम
ईमान ले आएंगे। (12)
उन को नसीहत कहां याद आएगी?
उन के पास तो खोल खोल कर बयान
करने वाला रसूल आ चुका है। (13)
फिर वह उस से फिर गए और
कहने लगेः (यह तो) सिखाया हुआ
दीवाना है। (14)
बेशक हम थोड़ा अ़ज़ाब खोलने वाले
हैं (मगर) तुम बेशक फिर बाग़ियाना
हालत पर लौट आने वाले हो। (15)
जिस दिन हम सख़्त पकड़ पकड़ेंगे।
बेशक हम इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (16)
और हम उन से पहले क़ौमे
फ़िरऔन को आज़मा चुके हैं, और उन के
पास एक आ़ली क़द्र रसूल आया। (17)
कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले
कर दो, बेशक मैं तुम्हारे लिए एक
रसूल अमीन हूँ। (18)
और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबिल
सरकशी न करो, बेशक मैं तुम्हारे पास
वाज़ेह दलील के साथ आया हूँ। (19)
और बेशक मैं पनाह लेता हूँ अपने
रब की और तुम्हारे रब की (उस से)
कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20)
और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते
तो मुझ से एक किनारे हो जाओ। (21)
तो उस ने अपने रब से दुआ की
कि यह मुजरिम लोग हैं। (22)
(इरशादे इलाही हुआ) तो तुम मेरे
बन्दों को ले जाओ रातों रात, बेशक
तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23)
और छोड़ जाओ दर्या ठहरा (खुला)
हुआ, बेशक वह एक लशकर हैं
डूबने वाले। (24)
और वह छोड़ गए कितने ही
बाग़ात, और चश्मे, (25)
और खेतियां, और नफ़ीस मकान, (26)

وَّنَعۡمَةٍ كَانُوۡا فِيۡهَا فٰكِهِيۡنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ وَاَوۡرَثۡنٰهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿٢٨﴾

28	दूसरे	क़ौम	और हम ने वारिस बनाया उन का	उसी तरह	27	मज़े उड़ाते	उस में	वह थे	और नेमतें

فَمَا بَكَتۡ عَلَيۡهِمُ السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ وَمَا كَانُوۡا مُنۡظَرِيۡنَ ﴿٢٩﴾ ع ٢٩ ١٤

29	ढील दिए गए	और न हुए वह	और ज़मीन	आस्मान	उन पर	सो न रोए

وَلَقَدۡ نَجَّيۡنَا بَنِيۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنَ الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿٣٠﴾ مِنۡ فِرۡعَوۡنَ

फ़िरऔन	से	30	अज़ाब ज़िल्लत वाला	से	बनी इस्राईल	और तहक़ीक़ हम ने नजात दी

اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخۡتَرۡنٰهُمۡ عَلٰى عِلۡمٍ

दानिस्ता	और अलबत्ता हम ने उन्हें पसंद किया	31	हद से बढ़ जाने वालों में से	सरकश	था	बेशक वह

عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ مِّنَ الۡاٰيٰتِ مَا فِيۡهِ بَلٰٓـؤٌا مُّبِيۡنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

बेशक यह लोग	33	खुली	आज़माइश	वह जिन में	निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	32	तमाम जहान वालों पर

لَيَقُوۡلُوۡنَ ﴿٣٤﴾ اِنۡ هِىَ اِلَّا مَوۡتَتُنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ بِمُنۡشَرِيۡنَ ﴿٣٥﴾

35	दोबारा उठाए जाने वाले	और हम नहीं	पहली (एक ही) बार	हमारा मरना	मगर-सिर्फ़	नहीं यह	34	अलबत्ता कहते हैं

فَاۡتُوۡا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمۡ خَيۡرٌ اَمۡ قَوۡمُ تُبَّعٍ

क़ौमे तुब्बअ़	या	बेहतर	क्या वह	36	सच्चे	अगर तुम हो	हमारे बाप दादा	तो ले आओ

وَّالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا

और नहीं	37	मुज्रिम (जमा)	थे	बेशक वह	हम ने हलाक किया उन्हें	उन से क़ब्ल	और जो लोग

خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقۡنٰهُمَاۤ اِلَّا

मगर	हम ने नहीं पैदा किया उन्हें	38	खेलते हुए	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया

بِالۡحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوۡمَ الۡفَصۡلِ

फ़ैसले का दिन	बेशक	39	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	हक़ के साथ (ठीक तौर पर)

مِيۡقَاتُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٤٠﴾ يَوۡمَ لَا يُغۡنِىۡ مَوۡلًى عَنۡ مَّوۡلًى شَيۡـًٔا

कुछ	किसी साथी के	कोई साथी	न काम आएगा	जिस दिन	40	सब	उन सब का वक़्ते मेक़र्रर

وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿٤٢﴾ ٢ ع ١٣ ١٥

42	रहम करने वाला	वह ग़ालिब	बेशक वह	रहम किया अल्लाह ने	जिस	मगर	41	मदद किए जाएंगे	और न वह

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الۡاَثِيۡمِ ﴿٤٤﴾ كَالۡمُهۡلِ ۚ يَغۡلِىۡ معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

खौलता है	पिघले हुए तांबे की तरह	44	खाना गुनाहगारों का	43	थोहर का दरख़्त	बेशक

فِى الۡبُطُوۡنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلۡىِ الۡحَمِيۡمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى

तक	फिर खींचो उसे	तुम पकड़ लो उसे	46	गर्म पानी	जैसे खौलता हुआ	45	पेटों में

سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ﴿٤٨﴾

48	अज़ाब खौलता हुआ पानी	से	उस का सर	पर-ऊपर	फिर डालो	47	बीचों बीच जहन्नम

और नेमतें, जिन में वह मज़े उड़ाते थे। (27)
उसी तरह (हुआ उन का अन्जाम), और हम ने दूसरी क़ौम को उन का वारिस बनाया। (28)
सो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और वह न हुए ढील दिए गए (लोगों में)। (29)
और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से नजात दी, (30)
(यानी) फ़िरऔ़न से, बेशक वह हद से बढ़ जाने वालों में से सरकश था। (31)
और अलबत्ता हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर दानिस्ता पसंद किया। (32)
और हम ने उन्हें खुली निशानियां दीं, जिन में खुली आज़माइश थी। (33)
बेशक यह लोग कहते हैं, (34)
यह हमारा मरना तो सिर्फ़ एक ही बार है और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। (35)
अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को ले आओ। (36)
क्या वह बेहतर हैं या तुब्बअ़ की क़ौम? और जो लोग उन से क़ब्ल थे? हम ने उन्हें हलाक किया, बेशक वह मुज्रिम लोग थे। (37)
और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन के दरमियान है खेलते हुए (अबस खेल कूद के लिए) नहीं पैदा किया। (38)
हम ने उन्हें नहीं पैदा किया मगर हक़ के साथ, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (39)
बेशक फ़ैसले का दिन (रोज़े क़ियामत) उन सब का वक़्ते मुक़र्रर (मीआ़द) है। (40)
जिस दिन काम न आएगा कोई साथी कुछ भी किसी साथी के, और न वह मदद किए जाएंगे। (41)
मगर जिस पर अल्लाह ने रहम किया, बेशक वही है ग़ालिब रहम करने वाला। (42)
बेशक थोहर का दरख़्त। (43)
गुनाहगारों का खाना है। (44)
(वह) पेटों में पिघले हुए तांबे की तरह खौलता रहेगा। (45)
जैसे खौलता हुआ गर्म पानी। (46)
उसे पकड़ लो, फिर उसे जहन्नम के बीचों बीच तक खींचो। (47)
फिर उस के सर के ऊपर डालो खौलते हुए पानी के अ़ज़ाब से। (48)

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

उस में	जो तुम थे	बेशक यह	49	इज़्ज़त वाला	ज़ोर आवर	तू	बेशक तू	चख

تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

52	और चश्मे	बाग़ात	में	51	अम्न का मुक़ाम	में	बेशक मुत्तक़ीन (अल्लाह से डरने वाले)	50	शक करते

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ ۟ وَزَوَّجْنٰهُمْ

और हम जोड़े बना देंगे उन के लिए	इसी तरह	53	एक दूसरे के आमने सामने	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	पहने हुए

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

वह न चखेंगे	55	इत्मीनान से	हर क़िस्म का मेवा	उस में	वह मांगेंगे	54	ख़ूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियां

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

56	जहन्नम का अ़ज़ाब	और उस (अल्लाह) ने बचा लिया उन्हें	पहली मौत	सिवाए	मौत	वहाँ

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ

हम ने इसे आसान कर दिया	इस के सिवा नहीं	57	कामयाबी बड़ी	यही	यह	तुम्हारा रब	से - के	फ़ज़्ल से

ع ١٧ ٣ ١٦ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	इन्तिज़ार में हैं	बेशक वह	पस आप (स) इन्तिज़ार करें	58	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) की ज़बान में

آيَاتُهَا ٣٧ ❀ سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ (٤٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4	(45) सूरतुल जासिया गिरी हुई	आयात 37

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	बेशक	2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह (की तरफ़) से	नाज़िल की हुई किताब	1	हा-मीम

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

जो जानवर	वह फैलाता है	और जो	और तुम्हारी पैदाइश में	3	अहले ईमान के लिए	अलबत्ता निशानियां	और ज़मीन

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अल्लाह ने उतारा	औत जो	और दिन	रात	और तबदीली	4	यक़ीन करने वाले लोगों के लिए	निशानियां

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

उस के मरने (ख़ुश्क होने) के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	रिज़्क़	आस्मान से

وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

हम वह पढ़ते हैं	अल्लाह के अहकाम	यह	5	अ़क़्ल (सलीम) वालों के लिए	निशानियां	हवाएं	और गर्दिश

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

6	वह ईमान लाएंगे	और उसकी आयात	अल्लाह के बाद	बात	पस किस	हक़ के साथ	आप (स) पर

चख, बेशक ज़ोर आवर, इज़्ज़त वाला है तू। (49) बेशक यह है वह जिस में तुम शक करते थे। (50) बेशक मुत्तक़ी अम्न के मुक़ाम में होंगे। (51) बाग़ात और चश्मों में। (52) पहने हुए बारीक और दबीज़ रेशम के कपड़े एक दूसरे के आमने सामने (बैठे होंगे)। (53) उसी तरह हम ख़ूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियों से उन के जोड़े बना देंगे। (54) वह मांगेंगे उस में इत्मीनान से हर क़िस्म का मेवा। (55) वह पहली मौत के सिवा वहाँ (फिर) मौत का ज़ाइक़ा न चखेंगे, और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया। (56) तुम्हारे रब का फ़ज़्ल, यही है बड़ी कामयाबी। (57) बेशक हम ने इस (क़ुरआन) को आसान कर दिया है आप की ज़बान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (58) पस आप (स) इन्तिज़ार करें, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (59)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1) यह नाज़िल की हुई किताब है, ग़ालिब हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से। (2) बेशक आस्मानों और ज़मीन में अलबत्ता अहले ईमान के लिए निशानियां हैं। (3) और तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वह फैलाता है, उन में यक़ीन करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (4) और रात दिन की तबदीली में, और उस रिज़्क़ (बारिश) में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा, फिर उस से ज़िन्दा किया ज़मीन को उस के ख़ुश्क होने के बाद और हवाओं की गर्दिश में अ़क़्ले सलीम रखने वालों के लिए निशानियां हैं। (5) यह अल्लाह के अहकाम हैं जिन्हें हम आप (स) पर हक़ के साथ (ठीक ठीक) पढ़ते हैं, पस अल्लाह और उस की आयात के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे? (6)

ख़राबी है हर झूट बान्धने वाले गुनाहगार के लिए। (7) वह अल्लाह की आयात को सुनता है जो उस पर पढ़ी जाती हैं, फिर तकब्बुर करता हुआ अड़ा रहता है गोया कि उस ने सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (8) और जब वह हमारी आयात के किसी शै से वाक़िफ़ होता है तो वह उस को पकड़ता (बनाता है) हँसी मज़ाक़, यही लोग हैं जिन के लिए रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब है। (9) उन के आगे जहन्नम है, और उन के कुछ काम न आएंगे जो उन्हों ने कमाया और वह न जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहराया, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (10) यह (क़ुरआन सरासर) हिदायत है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया अपने रब की आयात का, उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब में से एक बड़ा अ़ज़ाब होगा। (11) अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि चलें उस में उस के हुक्म से कश्तियां, और ताकि उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (12) और उस ने तुम्हारे लिए अपने हुक्म से मुसख़्ख़र किया सब जो आस्मानों में और ज़मीन में हैं, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13) आप (स) उन लोगों को फ़रमा दें जो ईमान लाए कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (जज़ाए आमाल) की उम्मीद नहीं रखते ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे उन के आमाल का। (14) जिस ने नेक अ़मल किया अपनी ज़ात के लिए (किया) और जिस ने बुरा किया तो (उस का वबाल) उसी पर (होगा), फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (15) और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को किताब (तौरेत) और हुकूमत और नुबूव्वत दी और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें अ़ता कीं, और हम ने उन्हें जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (16) और हम ने उन्हें दीन के बारे में वाज़ेह निशानियां दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया मगर उस के बाद कि जब उन के पास इल्म आ गया आपस की ज़िद की वजह से, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा क़ियामत के दिन जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (17)

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

तकब्बुर करता हुआ	फिर अड़ा रहता है	पढ़ी जाती हैं उस पर	अल्लाह की आयात	वह सुनता है	7	गुनाहगार	हर झूट बान्धने वाले के लिए	ख़राबी

كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٨﴾ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا

किसी शै	हमारी आयात में से	और जब वह वाक़िफ़ हो	8	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	पस उसे ख़ुशख़बरी दो	उस ने नहीं सुना उसे	गोया कि

اتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩﴾ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ

जहन्नम	उन की दूसरी तरफ़ (आगे)	9	अ़ज़ाब रुस्वा करने वाला	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	वह उस को पकड़ता है

وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ

कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और न जो उन्हों ने ठहराया	कुछ	जो उन्हों ने कमाया	और न काम आएगा उन के

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠﴾ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ

उन के लिए	अपना रब	आयात को	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया (न माना)	यह (क़ुरआन) हिदायत	10	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए

عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ ع ١١ ١٧

कश्तियां	ताकि चलें	दर्या	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	अल्लाह वह जिस	11	दर्दनाक अ़ज़ाब	से	एक अ़ज़ाब

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا

जो	और उस ने मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए	12	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़्ल से	और कि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	उस में

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस में	बेशक	अपने हुक्म से	सब	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

उम्मीद नहीं रखते	उन लोगों से जो	दरगुज़र करें	ईमान लाए	उन लोगों को जो	फ़रमा दें	13	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए

اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अ़मल किया नेक	जिस	14	वह कमाते थे (आमाल)	उस का जो	उन लोगों को	ताकि वह बदला दे	अल्लाह के अय्याम

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

और तहक़ीक़ हम ने दी	15	तुम लौटाए जाओगे	तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तो उस पर	बुरा किया	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ

पाकीज़ा चीज़ें	और हम ने अ़ता कीं उन्हें	और नबूव्वत	और हुक्म	किताब	बनी इस्राईल

وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا

तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	अम्र से (दीन के बारे में)	वाज़ेह निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	16	जहान वालों पर	और हम ने फ़ज़ीलत दी उन्हें

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

बेशक तुम्हारा रब	आपस की	ज़िद से	इल्म	जब आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर

يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾

17	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क़ियामत के दिन	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ

ख़ाहिशात	और न पैरवी करें	तो आप (स) उस की पैरवी करें	दीन से-के	शरीअ़त (ख़ास तरीक़ा) पर	हम ने कर दिया आप को	फिर

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	अल्लाह से (के सामने)	आप (स) के	हरगिज़ काम न आएंगे	बेशक वह	18	इल्म नहीं रखते	उन लोगों की जो

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

19	परहेज़गारों	रफ़ीक़	और अल्लाह	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा)	और बेशक

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए	दानाई की बातें	यह

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	उन लोगों की तरह जो	कि हम कर देंगे उन्हें	बुराइयां	कमाईं (कीं)	वह जिन्हों ने	क्या गुमान करते हैं

٢ ع ١٠ ١٨ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ ع

21	जो वह हुक्म लगाते हैं	बुरा	और उन का मरना	उन का जीना	बराबर	और उन्हों ने अ़मल किए अच्छे

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ

उस का जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	और ताकि बदला दिया जाए	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	और पैदा किया अल्लाह ने

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ

और गुमराह कर दिया उसे अल्लाह	अपनी ख़्वाहिश	अपना माबूद	बना लिया	जो-जिस	क्या तुम ने देखा	22	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह

عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ

तो कौन	पर्दा	उस की आँख पर	और कर दिया (डाल दिया)	और उस का दिल	उस के कान	और उस ने मुहर लगा दी	इल्म पर (के बावजूद)

يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا

हमारी ज़िन्दगी	सिर्फ़	नहीं यह	और उन्हों ने कहा	23	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	अल्लाह के बाद	उसे हिदायत देगा

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ

उस का	उन्हें	और नहीं	ज़माना	मगर-सिर्फ़	और नहीं हलाक करता हमें	और हम जीते हैं	हम मरते हैं	दुनिया

مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती हैं उन पर	और जब	24	अटकल दौड़ाते हैं	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	से-कोई इल्म

مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	हमारे बाप दादा को	तुम ले आओ	वह कहते हैं	सिवा यह कि	उन की हुज्जत	नहीं होती

صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى

तरफ़	वह फिर तुम्हें जमा करेगा	वह फिर तुम्हें मौत देगा	अल्लाह तुम्हें ज़िन्दगी देता है	फ़रमा दें	25	सच्चे

٣ ع ٥ ١٩ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع

26	जानते नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	उस में	कोई शक नहीं	क़ियामत का दिन

फिर हम ने आप (स) को दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया तो आप (स) उस की पैरवी करें, और जो लोग इल्म नहीं रखते उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें। (18) बेशक वह अल्लाह के सामने आप के काम न आएंगे कुछ भी और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का रफ़ीक़ है। (19) यह लोगों के लिए दानाई की बातें हैं, और हिदायत ओ रहमत यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए। (20) क्या वह लोग यह गुमान करते हैं जिन्हों ने बुराइयां कीं कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए ताकि बराबर (हो जाए) उन का जीना और मरना, बुरा है जो वह हुक्म लगाते हैं। (21) और अल्लाह ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया हिक्मत के साथ और ताकि हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (22) क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने बना लिया अपनी ख़ाहिशों को अपना माबूद, और अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, और मुहर लगा दी उस के कान और उस के दिल पर, और डाल दिया उस की आँख पर पर्दा, तो कौन अल्लाह के बाद उसे हिदायत देगा, तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (23) और उन्हों ने कहा कि यह (ज़िन्दगी और कुछ) नहीं सिर्फ़ हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और हम जीते हैं, और हमें सिर्फ़ ज़माना हलाक कर देता है, और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (24) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो उन की हुज्जत (दलील) नहीं होती इस के सिवा कि वह कहते हैं: हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप फ़रमा दें: अल्लाह (ही) तुम्हें ज़िन्दगी देता है (वही) फिर तुम्हें मौत देगा फिर (वही) तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा, जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (26)

और अल्लाह (ही) के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम (बपा) होगी उस दिन बातिल परस्त ख़सारा पाएंगे। (27)
और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे, हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ पुकारी जाएगी, आज तुम्हें बदला दिया जाएगा उस का जो तुम करते थे। (28)
यह हमारी तहरीर है जो तुम्हारे बारे में हक़ के साथ बोलती है, बेशक हम लिखाते थे जो तुम करते थे। (29)
पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन्हें उन का रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही है खुली कामयाबी। (30)
और वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (उन्हें कहा जाएगा) सो क्या तुम पर मेरी आयात न पढ़ी जाती थीं? तो तुम ने तकब्बुर किया और तुम मुज्रिम लोग थे। (31)
और जब (तुम से) कहा जाता था कि बेशक अल्लाह का वादा सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहा: हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है! हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम नहीं हैं यक़ीन करने वाले। (32)
और उन पर उन के आमाल की बुराइयां खुल गईं और उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (33)
और कहा जाएगा: हम ने तुम्हें भुला दिया है जैसे तुम ने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। (34)
यह इस लिए है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयात को एक मज़ाक़, और तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा था, सो वह आज उस से न निकाले जाएंगे और न उन्हें (अल्लाह की) रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा। (35)
पस तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है आस्मानों का और रब है ज़मीन का, और रब है तमाम जहानों का। (36)
और उसी के लिए है किबरियाई (बड़ाई) आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (37)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ

ख़सारा पाएंगे	उस दिन	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए बादशाहत

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ

अपनी किताब (नामाए आमाल) की तरफ़	पुकारी जाएगी	उम्मत	हर	घुटनों के बल गिरी हुई	हर उम्मत	और तुम देखोगे	27	बातिल परस्त

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ

तुम पर (तुम्हारे बारे में)	बोलती है	यह हमारी किताब (तहरीर)	28	तुम करते थे	जो	तुम्हें बदला दिया जाएगा	आज

بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	पस जो	29	तुम करते थे	जो	लिखाते थे	बेशक हम	हक़ के साथ

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

कामयाबी	वह (यही)	यह	अपनी रहमत में	उन का रब	तो वह दाख़िल करेगा उन्हें	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ

तुम पर	पढ़ी जाती	मेरी आयात	सो क्या न थीं	कुफ़्र किया	और वह लोग जिन्हों ने	30	खुली

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	कहा जाता था बेशक	और जब	31	मुज्रिम (जमा)	लोग	और तुम थे	तो तुम ने तकब्बुर किया

حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِىْ مَا السَّاعَةُ ۙ

क्या है क़ियामत	हम नहीं जानते	तुम ने कहा	उस में	कोई शक नहीं	और क़ियामत	सच

اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	उन पर	और खुल गईं	32	यक़ीन करने वाले	हम	और नहीं	अटकल जैसा	मगर-सिर्फ़	नहीं हम गुमान करते

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ

आज	और कहा जाएगा	33	वह मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जिस का वह थे	उन्हें	और घेर लिया	जो उन्हों ने किया (आमाल)

نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	इस	अपना दिन	मिलना	तुम ने भुला दिया	जैसे	हम ने भुला दिया तुम्हें

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ

और फ़रेब दिया तुम्हें	एक मज़ाक़	अल्लाह की आयात	तुम ने बना लिया	इस लिए कि तुम	यह	34	कोई मददगार (जमा)

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा	और न उन्हें	उस से	वह न निकाले जाएंगे	सो आज	दुनिया की ज़िन्दगी

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	तमाम जहानों का रब	और ज़मीन का रब	आस्मानों का रब	पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾ ع ٤ ١١ ٢٠

37	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	किबरियाई	और उस के लिए